



International Conference – 2025: Developed India @ 2047

Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025

Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

समकालीन भारत में धर्म और राजनीति

डॉ० शिवानन्द कुमार

स्वतंत्र इतिहास लेखक एवं विचारक

सारांश

समकालीन भारत में धर्म और राजनीति का संबंध जटिल और बहुआयामी है, जो देश की सांस्कृतिक, सामाजिक और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में गहराई से निहित है। धर्म, जो व्यक्तिगत आस्था और सांस्कृतिक पहचान का स्रोत है, और राजनीति, जो समाज के प्रशासन और नीतियों का निर्धारण करती है, दोनों ही भारतीय समाज के अभिन्न अंग हैं।

इतिहास में, धर्म और राजनीति का घनिष्ठ संबंध रहा है। प्राचीन काल में, राजा धर्म के संरक्षक माने जाते थे, और उनकी नीतियाँ धार्मिक सिद्धांतों पर आधारित होती थीं। मध्यकाल में, सूफी और भक्ति आंदोलनों ने धार्मिक सहिष्णुता और सामाजिक समरसता को प्रोत्साहित किया। आधुनिक काल में, महात्मा गांधी जैसे नेताओं ने धर्म और राजनीति के समन्वय से स्वतंत्रता संग्राम को दिशा दी।

स्वतंत्रता के पश्चात, भारतीय संविधान ने देश को धर्मनिरपेक्ष राज्य घोषित किया, जहाँ सभी धर्मों का समान सम्मान हो। इसके बावजूद, राजनीति में धर्म की भूमिका समाप्त नहीं हुई। विभिन्न राजनीतिक दल और नेता धार्मिक भावनाओं का उपयोग अपने लाभ के लिए करते रहे हैं, जिससे सांप्रदायिक तनाव और विभाजन की स्थितियाँ उत्पन्न हुई हैं।

समकालीन समय में, यह आवश्यक है कि धर्म और राजनीति अपनी-अपनी मर्यादा में रहकर समाज की भलाई के लिए कार्य करें। धर्म, नैतिकता और सदाचार का मार्गदर्शन प्रदान करे, जबकि राजनीति, धर्मनिरपेक्षता और समावेशिता के सिद्धांतों पर आधारित होकर सभी नागरिकों के लिए समान अवसर और न्याय सुनिश्चित करे। धर्म और राजनीति का संतुलित समन्वय ही एक स्वस्थ, समृद्ध और समरस समाज की स्थापना में सहायक हो सकता है।

प्रमुख शब्द:- , सूफी, धर्मनिरपेक्ष., पश्चात, धर्म, नैतिकता, संविधान, समन्वय, सांप्रदायिक ।



International Conference – 2025: Developed India @ 2047

Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025

Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

भूमिका

भारत एक बहुसांस्कृतिक, बहुधार्मिक और लोकतांत्रिक देश है, जहाँ धर्म और राजनीति का गहरा संबंध रहा है। यह संबंध ऐतिहासिक, सामाजिक और सांस्कृतिक कारकों से प्रभावित होता आया है। स्वतंत्रता संग्राम से लेकर आधुनिक भारत तक, धर्म और राजनीति के बीच संतुलन बनाए रखने की चुनौती लगातार बनी हुई है। वर्तमान समय में यह मुद्दा और भी जटिल हो गया है, क्योंकि राजनीतिक दल और धार्मिक संगठनों के बीच संबंधों ने भारतीय राजनीति के स्वरूप को प्रभावित किया है। भारत एक ऐसा देश है, जो अपनी सांस्कृतिक, धार्मिक और भाषाई विविधताओं के लिए पूरी दुनिया में प्रसिद्ध है। यहाँ हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, बौद्ध, जैन, यहूदी, पारसी, बहाई, और अनेक जनजातीय धर्मों के अनुयायी आपसी सहयोग और संघर्ष, दोनों के ऐतिहासिक संबंधों के साथ रहते आए हैं। भारतीय समाज की इस बहुलता ने न केवल इसकी संस्कृति को समृद्ध किया है, बल्कि इसके राजनीतिक ढांचे को भी गहराई से प्रभावित किया है।

भारत की राजनीति और धर्म के बीच संबंध अत्यंत प्राचीन और जटिल हैं। प्राचीन काल से ही राज्य और धर्म का घनिष्ठ संबंध रहा है। उस समय राजा को धर्म का पालनकर्ता और रक्षक माना जाता था। राज्य की व्यवस्था में धर्म का सीधा दखल था। लेकिन स्वतंत्र भारत ने संविधान द्वारा खुद को "धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र" के रूप में स्थापित किया, जिसका अर्थ था कि राज्य किसी एक धर्म को न तो मान्यता देगा, न ही किसी धर्म के आधार पर भेदभाव करेगा। फिर भी, व्यवहार में भारतीय राजनीति में धर्म की गहराई से जड़ें जमी हुई हैं। राजनीतिक दल, धार्मिक पहचान, विश्वास और भावनाओं का उपयोग अपने हितों के लिए करते रहे हैं। चुनाव के समय धार्मिक नारों, प्रतीकों और आंदोलनों का सहारा लिया जाता है। धार्मिक पहचान को वोट बैंक के रूप में उपयोग करने की प्रवृत्ति लगातार बढ़ती जा रही है। इस प्रकार समकालीन भारत में धर्म और राजनीति के संबंध को न केवल सामाजिक, बल्कि संवैधानिक, सांस्कृतिक और नैतिक दृष्टि से भी गंभीरता से समझना आवश्यक है। भारत की सामाजिक संरचना इतनी विविधतापूर्ण है कि शायद ही कोई और देश हो, जहाँ इतने अलग-अलग धर्म, पंथ, भाषाएँ और जातियाँ एक साथ रहती हों। यहाँ धर्म केवल व्यक्तिगत आस्था या पूजा पद्धति तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सामाजिक जीवन, रीति-रिवाज, कानून, राजनीति, और आर्थिक व्यवहार तक फैला हुआ है।



International Conference – 2025: Developed India @ 2047

Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025

Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

भारतीय समाज में धर्म का प्रभाव इतना गहरा है कि यह व्यक्तियों की पहचान, उनके संबंध, विवाह, खान-पान, शिक्षा और व्यापार तक को प्रभावित करता है। इसलिए जब कोई राजनीतिक दल या नेता जनता तक पहुँचना चाहता है, तो वह स्वाभाविक रूप से उन धार्मिक भावनाओं को संबोधित करने की कोशिश करता है, जो जनता के दिल के बेहद करीब हैं। हालाँकि, भारतीय संविधान ने सभी नागरिकों को समान अधिकार, धार्मिक स्वतंत्रता और धर्मनिरपेक्ष राज्य की गारंटी दी है, लेकिन व्यावहारिक राजनीति में धार्मिक पहचान को बार-बार उभारा जाता है।

भारतीय राजनीति में धर्म की भूमिका को समझने के लिए हमें इसके ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य को देखना होगा।

प्राचीन काल

प्राचीन भारत में राजनीति और धर्म का घनिष्ठ संबंध था। राजा को धर्म का संरक्षक माना जाता था, और राज्य की नीतियाँ धार्मिक सिद्धांतों पर आधारित होती थीं। महाजनपद काल से लेकर गुप्त साम्राज्य तक, धार्मिक विचारधाराओं का राजनीतिक निर्णयों में प्रभाव रहा। भारत का इतिहास अत्यंत प्राचीन और समृद्ध है, जिसमें धर्म और राजनीति का गहरा और जटिल संबंध रहा है। प्राचीन काल में धर्म और राजनीति एक-दूसरे के पूरक के रूप में कार्य करते थे। उस समय धर्म केवल व्यक्तिगत आस्था या पूजा-पद्धति तक सीमित नहीं था, बल्कि सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक जीवन के हर पहलू को नियंत्रित करता था। इस खंड में हम प्राचीन भारत में धर्म और राजनीति के गहरे संबंधों की व्यापक विवेचना करेंगे।

प्राचीन भारत में धर्म और राजनीति अलग-अलग नहीं थे, बल्कि राजा और राज्य व्यवस्था धर्म के नियमों और आदेशों पर आधारित थी। राजा का प्रमुख कार्य न केवल राज्य की रक्षा करना था, बल्कि 'धर्म' की रक्षा और पालन करना भी था। धर्म और राजनीति को एक-दूसरे से अलग नहीं किया जाता था, बल्कि दोनों को समाज के संचालन की दो मुख्य धारणाएँ माना जाता था।

राजा को 'धर्मरक्षक' (धर्म का रक्षक) और 'धर्मपालक' (धर्म का पालन करने वाला) कहा जाता था। धर्म के बिना राजनीति की कल्पना नहीं की जाती थी। उस समय "राजधर्म" की अवधारणा के माध्यम से शासक की नीतियों और निर्णयों को धार्मिक सिद्धांतों से जोड़ा जाता था।



International Conference – 2025: Developed India @ 2047

Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025

Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

वेद प्राचीन भारत के सबसे प्राचीन ग्रंथ हैं, जिन्हें "श्रुति" कहा जाता है। वेदों में न केवल धार्मिक अनुष्ठानों और यज्ञों का वर्णन है, बल्कि राज्य की अवधारणा, राजा के कर्तव्यों, न्याय व्यवस्था, और समाज के संचालन के सिद्धांत भी बताए गए हैं।

राजा को देवताओं का प्रतिनिधि माना गया। यज्ञों के माध्यम से राजा की शक्ति और अधिकार को धार्मिक वैधता दी जाती थी। ऋग्वेद में 'राजसूय यज्ञ' और 'अश्वमेध यज्ञ' जैसे अनुष्ठानों का वर्णन है, जिनका मुख्य उद्देश्य राजा की शक्ति को सार्वभौमिक मान्यता दिलाना था।

उपनिषदों में ब्रह्म (परम सत्य) और आत्मा (स्वयं) के ज्ञान के माध्यम से एक व्यापक धर्म का चित्रण है। उपनिषदों ने शासक को यह शिक्षा दी कि उसका कर्तव्य है कि वह न्याय, अहिंसा, और सत्य पर आधारित शासन करे।

धर्मशास्त्रों में समाज, परिवार, राजनीति, न्याय, दंड और राजा के कर्तव्यों का स्पष्ट विवरण है। मनुस्मृति में 'राजधर्म' का विस्तृत वर्णन मिलता है, जिसमें राजा को प्रजा के कल्याण, दंड और न्याय की व्यवस्था करने का आदेश दिया गया। धर्मशास्त्रों में वर्ण व्यवस्था और राजा की भूमिका के बीच संबंध को स्पष्ट किया गया।

राजा को "क्षत्रिय" धर्म के अनुसार प्रजा की रक्षा करने, न्याय देने, और धर्म की रक्षा करने की जिम्मेदारी दी गई। महाभारत में 'राजधर्म' का गहन विश्लेषण है। युधिष्ठिर, जिन्हें धर्मराज कहा जाता है, से धर्म और राजनीति का संतुलन बनाए रखने की अपेक्षा की जाती है। महाभारत में नीति, राजनीति और धर्म का गहरा मेल दिखता है।

श्रीकृष्ण के द्वारा अर्जुन को गीता में धर्म और राजनीति के कर्तव्यों का उपदेश दिया जाता है। गीता में "कर्मयोग" का सिद्धांत शासक के लिए आदर्श मार्ग बताया गया।

रामायण में भगवान राम को 'मर्यादा पुरुषोत्तम' और 'आदर्श राजा' की छवि के रूप में प्रस्तुत किया गया है। राम के शासन को "रामराज्य" कहा गया, जिसमें धर्म और न्याय के आदर्श स्थापित किए गए। राम का समस्त जीवन धर्म के पालन की मिसाल बना।



International Conference – 2025: Developed India @ 2047

Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025

Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

कौटिल्य का "अर्थशास्त्र" प्राचीन भारत का महत्वपूर्ण राजनीतिक ग्रंथ है। इसमें धर्म और राजनीति के संतुलन पर बल दिया गया। कौटिल्य ने राजा को सलाह दी कि राज्य की रक्षा और प्रजा के कल्याण के लिए धर्म और नीति दोनों आवश्यक हैं। उन्होंने यद्यपि शक्ति और यथार्थ पर आधारित राजनीति की बात की, परंतु राजा को धर्म के पालन की भी सलाह दी।

कौटिल्य ने स्पष्ट किया कि "राजा वह है जो धर्म, अर्थ और काम में संतुलन बनाए।" शुकनीतिसार जैसे ग्रंथों में भी राजधर्म और नीतियों की चर्चा की गई, जहाँ धर्म आधारित शासन की वकालत की गई। धर्म आधारित प्रशासन और न्याय प्रणाली, प्राचीन भारत की न्याय व्यवस्था भी धर्म पर आधारित थी। राजा के न्याय का आधार धर्मशास्त्र होते थे। दंड नीति, कराधान, और युद्ध की नीतियाँ धर्मशास्त्रों के अनुसार होती थीं। "दंड नीति" (सजा की नीति) को भी धर्म का पालन करने के रूप में देखा जाता था। राजा द्वारा करवाए जाने वाले यज्ञ न केवल धार्मिक कार्य होते थे, बल्कि उनकी सत्ता की वैधता को भी प्रमाणित करते थे। "अश्वमेध यज्ञ", "राजसूय यज्ञ", "वाजपेय यज्ञ" जैसे अनुष्ठान राजा की शक्ति और धार्मिक अधिकार का प्रतीक थे।

प्राचीन भारत में धर्म और राजनीति का संबंध अत्यंत घनिष्ठ और जटिल था। राजा का धर्म पालन, प्रजा के कल्याण, न्याय व्यवस्था और प्रशासन सभी धर्म आधारित थे। धर्म को केवल पूजा-पद्धति नहीं, बल्कि संपूर्ण जीवन-शैली माना गया। राजा का मुख्य उद्देश्य था धर्म की रक्षा, न्याय की स्थापना, प्रजा का कल्याण। अतः यह कहा जा सकता है कि प्राचीन भारत की राजनीति 'धर्म' के सिद्धांतों पर आधारित थी। आधुनिक भारत के धर्मनिरपेक्ष राज्य के विचार की तुलना में प्राचीन काल में धर्म और राजनीति का यह घनिष्ठ संबंध एक भिन्न प्रकार की राज्य व्यवस्था को जन्म देता था।

मध्यकाल

मुगल काल में भी धर्म और राजनीति का मेल देखा गया। अकबर जैसे शासकों ने धर्मनिरपेक्ष नीति अपनाई, जबकि औरंगज़ेब की धार्मिक नीतियों ने सामाजिक तनाव को बढ़ाया। भारत का मध्यकालीन इतिहास (लगभग 8वीं सदी से 18वीं सदी तक) धर्म और राजनीति के अत्यंत गहरे और जटिल संबंधों का काल है। इस समय भारत में अनेक राजवंशों, सुल्तानों, और मुगलों का शासन रहा। इन शासकों ने राजनीति और धर्म को अपनी सत्ता की मजबूती के लिए इस्तेमाल किया। कहीं धर्म ने



International Conference – 2025: Developed India @ 2047

Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025

Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

राजनीति को नैतिक आधार दिया, तो कहीं राजनीति ने धर्म को अपने स्वार्थ के लिए उपयोग किया। इस काल में धर्म और राजनीति की गहराई को समझने के लिए हमें हिन्दू राजाओं, इस्लामी सल्तनतों, और मुगल साम्राज्य की नीतियों और उनकी धार्मिक दृष्टिकोण का गहन अध्ययन करना होगा। इस काल में अपनी सत्ता को वैध ठहराने के लिए धर्म का सहारा लेते थे। धार्मिक सहिष्णुता और असहिष्णुता दोनों देखने को मिली। राजनीति में धार्मिक संस्थाओं की भूमिका महत्वपूर्ण रही। धार्मिक आंदोलनों का राजनीतिक प्रभाव पड़ा, जैसे भक्ति आंदोलन और सूफी आंदोलन। राजनीति के माध्यम से धर्म का प्रचार-प्रसार और धर्मांतरण। मध्यकाल: राजपूत और अन्य हिन्दू राज्य राजपूत काल में राजा को "धर्मपालक" कहा जाता था। मंदिर निर्माण और धर्मशालाओं के माध्यम से धर्म का प्रचार। मंदिर केवल पूजा स्थल नहीं थे, बल्कि राजनीतिक शक्ति और समृद्धि के केंद्र भी थे। मठ, आश्रम, और मंदिर राजनीति और सामाजिक व्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे। ब्राह्मण और पुजारियों की सलाह पर राजा निर्णय लेते थे। 'धर्मशास्त्र' के आधार पर न्याय और शासन चलता था। राजा का कर्तव्य 'राजधर्म' का पालन करना। प्रजा की रक्षा और न्याय, 'अहिंसा' और 'सत्य' जैसे सिद्धांत पर आधारित थी।

हिन्दू-मुस्लिम संघर्ष, मंदिर विध्वंस और दंगों की घटनाएँ, धर्मांतरण और उसका विरोध। लेकिन साथ ही हिन्दू-मुस्लिम सहयोग भी जैसे अकबर की नीति। मध्यकाल में धर्म और राजनीति का संबंध अत्यंत महत्वपूर्ण रहा। शासक अपने राज्य की मजबूती और विस्तार के लिए धर्म का उपयोग करते थे। कई बार धार्मिक सहिष्णुता दिखाई गई, तो कई बार कट्टरता। भक्ति और सूफी आंदोलन ने धर्म और राजनीति के इस संघर्ष को संतुलित करने का प्रयास किया। इस काल का मुख्य संदेश "जब धर्म और राजनीति में संतुलन बना, तब समाज में शांति और समृद्धि आई; लेकिन जब दोनों में टकराव हुआ, तब संघर्ष, हिंसा और असंतोष का वातावरण बना।"

ब्रिटिश काल

औपनिवेशिक काल में अंग्रेजों ने "फूट डालो और राज करो" की नीति अपनाई, जिससे हिंदू-मुस्लिम विभाजन गहरा हुआ। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान महात्मा गांधी ने धर्म को नैतिकता के रूप में देखा, जबकि जिन्ना और सावरकर जैसे नेताओं ने इसे राजनीतिक पहचान से जोड़ा।



International Conference – 2025: Developed India @ 2047

Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025

Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

स्वतंत्रता के बाद भारत ने एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र के रूप में खुद को स्थापित किया। संविधान में धर्मनिरपेक्षता को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया, जिसका अर्थ था कि राज्य किसी धर्म को बढ़ावा नहीं देगा और सभी धर्मों के प्रति समान व्यवहार करेगा। कांग्रेस ने धर्मनिरपेक्षता की नीति को आगे बढ़ाया, लेकिन 1980 के दशक में पंजाब में खालिस्तानी आंदोलन और अयोध्या विवाद के कारण धर्म और राजनीति का समीकरण बदलने लगा।

समकालीन भारत में धर्म और राजनीति

1990 के बाद की राजनीति और हिंदुत्व का उदय

1990 के दशक में राम मंदिर आंदोलन और भाजपा के उदय के साथ धर्म का राजनीति में प्रभाव बढ़ा। 1992 में बाबरी मस्जिद विध्वंस और 2002 के गुजरात दंगों ने धर्म आधारित राजनीति को नया स्वरूप दिया। भारत एक धार्मिक विविधता वाला देश है जहाँ अनेक धर्म, संप्रदाय और परंपराएँ सह-अस्तित्व में हैं। भारत के संविधान ने "धर्मनिरपेक्षता" (Secularism) को देश की मूल भावना के रूप में स्वीकार किया है। लेकिन व्यवहार में धर्म और राजनीति का रिश्ता अत्यंत गहरा, जटिल और बहुआयामी बन गया है।

समकालीन भारत में धर्म और राजनीति के संबंध ने सामाजिक, आर्थिक, और सांस्कृतिक जीवन को गहराई से प्रभावित किया है। कई बार यह संबंध लोकतंत्र की मजबूती का कारण बनता है, और कई बार सांप्रदायिकता, दंगे, और सामाजिक विभाजन का कारण।

स्वतंत्रता संग्राम में महात्मा गांधी ने धर्म और नैतिकता को राजनीति का आधार बनाया। गांधी जी का 'रामराज्य' एक नैतिक आदर्श राज्य था, न कि धार्मिक। अलीगढ़ आंदोलन, खालसा आंदोलन, आर्य समाज, ब्रह्म समाज जैसे धार्मिक आंदोलनों का भी राजनीतिक प्रभाव पड़ा। 1947 का भारत-पाकिस्तान विभाजन धार्मिक आधार पर हुआ। इसके बाद भारत ने धर्मनिरपेक्ष राज्य की घोषणा की, जबकि पाकिस्तान इस्लामिक राष्ट्र बना। भारत धर्मनिरपेक्ष है, यानी राज्य का कोई "राजकीय धर्म" नहीं है। राज्य सभी धर्मों का समान सम्मान करता है। संविधान में भी इसके कानून हैं।

अनुच्छेद 25-28: सभी नागरिकों को धार्मिक स्वतंत्रता।

अनुच्छेद 14: सभी के लिए समानता।

अनुच्छेद 15: धर्म के आधार पर भेदभाव वर्जित।



International Conference – 2025: Developed India @ 2047

Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025

Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

कई राजनीतिक दल धर्म के नाम पर वोट मांगते हैं। धार्मिक भावनाओं को भड़काकर राजनीतिक लाभ उठाने की प्रवृत्ति। हिंदुत्व, मुस्लिम तुष्टीकरण, दलित बौद्ध आंदोलन जैसे उदाहरण। राजनीति और धर्म के मेल ने कई बार देश में सांप्रदायिक दंगे कराए। गोधरा कांड (2002), दिल्ली दंगे (2020), मुजफ्फरनगर दंगे (2013) इसके उदाहरण हैं। राम मंदिर आंदोलन, गुरुद्वारा आंदोलन, धार्मिक आरक्षण जैसी मांगें। गौ रक्षा, लव जिहाद, धर्मांतरण जैसे विषय राजनीतिक मुद्दे बने। राम जन्मभूमि-बाबरी मस्जिद विवाद दशकों तक चला, 2019 में सुप्रीम कोर्ट का फैसला। धार्मिक मुद्दे के राजनीतिकरण का बड़ा उदाहरण। धर्म आधारित व्यक्तिगत कानूनों (Personal Laws) की चुनौती। धार्मिक समुदायों की असहमति और राजनीतिक बहस। मुस्लिम महिलाओं के अधिकार का मामला। 2019 में कानून बना, लेकिन इस पर भी धर्म-आधारित राजनीति हुई।

गंगा-जमुनी तहजीब, इंटरफेथ डायलॉग। सामाजिक संगठनों का काम, जैसे – 'इंडिया अगेंस्ट हेट' कुछ दल धर्म को निजी मानते हैं। भारतीय संविधान के मूल्यों पर आधारित राजनीति की कोशिश। न्यायालय द्वारा धर्म आधारित राजनीति पर अंकुश। 'हिंदुत्व' को जीवनशैली कहना, लेकिन धर्म के नाम पर नफरत की निंदा।

चुनावी राजनीति और धार्मिक ध्रुवीकरण

भारत एक धर्मनिरपेक्ष, लोकतांत्रिक गणराज्य है, जहाँ विभिन्न धर्मों, जातियों और भाषाओं के लोग साथ रहते हैं। भारतीय संविधान ने सभी नागरिकों को समान अधिकार दिए हैं और धर्म को व्यक्तिगत विषय माना है। लेकिन विडंबना यह है कि चुनावी राजनीति में धर्म और संप्रदाय का अत्यधिक प्रयोग होने लगा है।

आज के समय में धार्मिक ध्रुवीकरण (Religious Polarization) भारतीय राजनीति का एक अहम हिस्सा बन चुका है। यह न केवल लोकतंत्र की मूल भावना के खिलाफ है, बल्कि समाज की एकता, अखंडता और शांति के लिए भी घातक सिद्ध हो रहा है। चुनावों में धार्मिक भावनाओं का दोहन किया जाने लगा। हिंदुत्व, मुस्लिम तुष्टीकरण और जातिगत समीकरणों का उपयोग राजनीतिक दल करने लगे। सोशल मीडिया के उदय के साथ धर्म और राजनीति का मिश्रण और जटिल हो गया। धार्मिक ध्रुवीकरण का अर्थ है किसी विशेष धर्म या समुदाय के आधार पर समाज और मतदाताओं को विभाजित करना। इसका उद्देश्य एक खास धर्म के लोगों को एकजुट कर राजनीतिक लाभ उठाना



International Conference – 2025: Developed India @ 2047

Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025

Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

होता है। चुनावों में जब राजनेता धार्मिक भावनाओं को उकसाकर वोट मांगते हैं, तब इसे धार्मिक धुवीकरण कहते हैं। भारत का भविष्य तभी सुरक्षित और उज्ज्वल हो सकता है, जब धर्म और राजनीति को अलग रखा जाए।

धर्म का स्थान आध्यात्मिक और व्यक्तिगत जीवन तक सीमित होना चाहिए, जबकि राजनीति का आधार विकास, शिक्षा, स्वास्थ्य, रोज़गार जैसे जनहित के मुद्दे होने चाहिए। यदि चुनावी राजनीति में धार्मिक धुवीकरण बंद नहीं हुआ, तो इससे भारत की एकता, लोकतंत्र, और सामाजिक ताने-बाने पर गंभीर संकट आ सकता है। इसलिए हर भारतीय नागरिक, राजनीतिक दल, और संस्थानों की जिम्मेदारी है कि वे धर्म का सदुपयोग करें, न कि राजनीतिक स्वार्थ के लिए उसे बदनाम करें।

धार्मिक कट्टरता और राजनीतिक प्रभाव

धार्मिक कट्टरता ने राजनीतिक दलों को मजबूत किया, लेकिन इससे सामाजिक समरसता को नुकसान पहुँचा। "लव जिहाद", "गौ रक्षा", "धर्मांतरण" जैसे मुद्दे राजनीतिक रूप से इस्तेमाल किए गए।

धर्म और राजनीति के प्रभाव

भारत जैसे बहुधर्मी और बहुजातीय देश में धर्म और राजनीति का गहरा संबंध है। धर्म और राजनीति दोनों ही समाज के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। धर्म जहाँ मनुष्य के आध्यात्मिक और नैतिक जीवन को दिशा देता है, वहीं राजनीति समाज के संचालन और विकास का माध्यम है। लेकिन जब ये दोनों आपस में गहराई से जुड़ते हैं, तो समाज और देश पर गहरे सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव छोड़ते हैं।

धर्म और राजनीति के सकारात्मक प्रभाव

नैतिक और आदर्श राजनीति को बढ़ावा देना धर्म के मूल सिद्धांत जैसे सत्य, अहिंसा, करुणा, सेवा आदि राजनीति को नैतिक और लोकहितकारी बना सकते हैं। महात्मा गांधी ने राजनीति में सत्य और अहिंसा के सिद्धांत का प्रयोग किया, जिससे स्वतंत्रता संग्राम नैतिक आधार पर लड़ा गया। धर्म के आदर्शों के आधार पर राजनीति गरीबों, दलितों, पिछड़ों के उत्थान के लिए काम कर सकती है। जैसे: हरिजनों के उत्थान, महिलाओं के अधिकार, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार। सही अर्थों में धर्म



International Conference – 2025: Developed India @ 2047

Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025

Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

और राजनीति का मेल सांप्रदायिक सौहार्द को बढ़ावा देता है। सभी धर्मों का सम्मान करने वाली राजनीति राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ करती है। धार्मिक मूल्यों से प्रेरित होकर राजनीति जनसेवा और विकास योजनाओं को प्राथमिकता देती है। गरीबों के लिए आश्रय, शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार आदि का प्रबंध।

धर्म और राजनीति के नकारात्मक प्रभाव

जब राजनीति धर्म के आधार पर होती है, तब सांप्रदायिकता (Communalism) बढ़ती है। हिंदू-मुस्लिम दंगे, सिख विरोधी दंगे, ईसाई मिशनरियों पर हमले जैसी घटनाएँ। राजनीति में धर्म के प्रयोग से समाज में 'हम' बनाम 'वे' का माहौल बनता है। इससे धार्मिक ध्रुवीकरण होता है और समाज में विभाजन, वैमनस्य, और असुरक्षा की भावना पैदा होती है। वोट बैंक की राजनीति धर्म के आधार पर मतदाताओं को लुभाने की प्रवृत्ति। इससे विकास, शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार जैसे असली मुद्दे पीछे छूट जाते हैं। धार्मिक भावनाओं का शोषण राजनीतिक दल धार्मिक प्रतीकों और भावनाओं का दुरुपयोग कर सत्ता प्राप्ति का साधन बनाते हैं। इससे धर्म की पवित्रता भी नष्ट होती है। आतंकवाद और उग्रवाद धर्म और राजनीति के गलत मेल से धार्मिक उग्रवाद, आतंकवाद, अलगाववाद जैसी समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। जैसे: कश्मीरी आतंकवाद, नक्सलवाद में धार्मिक रंग।

भारत में धर्म और राजनीति के प्रभाव के उदाहरण धर्म और राजनीति के प्रभाव की आलोचना तथा राजनीति में धर्म का अत्यधिक प्रभाव लोकतंत्र के लिए हानिकारक, राजनीति में धर्म का सीमित और संतुलित प्रयोग ही उचित है। अत्यधिक हस्तक्षेप से लोकतंत्र, समानता और न्याय की अवधारणा खतरे में पड़ जाती है। धर्म का राजनीति में प्रयोग केवल नैतिक दिशा के लिए राजनीति में धर्म की भूमिका नैतिकता, करुणा, सेवा भावना तक सीमित रहनी चाहिए। धर्म को सत्ता प्राप्ति का साधन नहीं बनाना चाहिए।

संविधान और कानून के अनुसार राजनीति में धर्म का अनुचित प्रयोग प्रतिबंधित हो। चुनाव आयोग और न्यायपालिका सख्ती से इसका पालन कराएँ। धर्मनिरपेक्ष और विकास केंद्रित राजनीति विकास, शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य जैसे मुद्दों पर राजनीति केंद्रित हो। सभी धर्मों को समान सम्मान और अवसर मिले। विद्यालयों, कॉलेजों में सांप्रदायिक सौहार्द की शिक्षा दी जाए। 'एकता में अनेकता' की भावना को बढ़ावा। धर्मगुरु समाज में शांति, प्रेम, भाईचारे का संदेश दें। वे राजनीति से दूरी बनाए रखें।



International Conference – 2025: Developed India @ 2047

Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025

Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

निष्कर्ष

धर्म और राजनीति दोनों समाज के महत्वपूर्ण स्तंभ हैं, लेकिन जब इनका मेल स्वार्थपूर्ण और सत्ता केंद्रित हो जाता है, तब समाज को विभाजित कर देता है। जरूरत है कि धर्म को राजनीति से अलग रखा जाए और राजनीति का आधार जनसेवा, विकास, और समानता बने। "राजनीति का धर्म जनता की सेवा होनी चाहिए, न कि धर्म का राजनीति में उपयोग।"

इसलिए हर नागरिक और राजनीतिक दल का कर्तव्य है कि वे भारतीय संविधान की धर्मनिरपेक्ष भावना का सम्मान करें और देश की एकता, अखंडता और लोकतंत्र की रक्षा करें। धर्म और राजनीति के घालमेल को रोकने के लिए जनता को शिक्षित करना जरूरी है।

मीडिया को निष्पक्ष और जिम्मेदार भूमिका निभानी चाहिए। सुप्रीम कोर्ट ने कई बार राजनीति में धर्म के दखल पर सख्त टिप्पणी की है। अदालतों को ऐसे मामलों में तेजी से फैसले लेने चाहिए। समकालीन भारत में धर्म और राजनीति का संबंध अत्यंत जटिल है। धर्म का राजनीति में उपयोग सकारात्मक भी हो सकता है, लेकिन जब इसे वोट बैंक और धुवीकरण के लिए इस्तेमाल किया जाता है, तो यह लोकतंत्र के लिए खतरा बन जाता है। भारत की विविधता और धर्मनिरपेक्षता की रक्षा के लिए हमें संविधान के मूल्यों का पालन करना होगा और राजनीति को धर्म के प्रभाव से मुक्त करने की दिशा में ठोस कदम उठाने होंगे। यदि राजनीति और धर्म का सही संतुलन बनाया जाए, तो यह समाज में शांति, सौहार्द और विकास का माध्यम बन सकता है।

संदर्भ

1. भारतीय संविधान – भारत सरकार का आधिकारिक दस्तावेज, जिसमें धर्मनिरपेक्षता, समानता, और स्वतंत्रता के प्रावधान शामिल हैं।
2. नेहरू, जवाहरलाल (1946)। भारत की खोज (Discovery of India) — भारत के ऐतिहासिक, सामाजिक, और धार्मिक पक्षों पर आधारित महत्वपूर्ण कृति।
3. गांधी, महात्मा (1938)। हिंद स्वराज (Hind Swaraj) — गांधी जी द्वारा धर्म, राजनीति, और नैतिकता पर आधारित विचार।
4. रजनी कोठारी (1970)। Politics in India — भारतीय राजनीति, धर्म, जाति और समाज पर व्यापक विश्लेषण।



International Conference – 2025: Developed India @ 2047

Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025

Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

5. अशोक मेहता (1984)। Religion and Politics in India — भारत में धर्म और राजनीति के आपसी संबंध पर महत्वपूर्ण अध्ययन।
6. रामचंद्र गुहा (2007)। India After Gandhi — स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत की राजनीति और समाज पर विस्तृत विवेचन।
7. भारत निर्वाचन आयोग, आचार संहिता) – चुनावों में धर्म, जाति आदि के दुरुपयोग पर दिशानिर्देश।
8. भारत में सांप्रदायिक दंगों, धार्मिक हिंसा, और राजनीति के प्रभाव पर रिपोर्ट।
9. आम्बेडकर, बी.आर. (1945)। जाति, धर्म और राजनीति पर भाषण – भारतीय समाज में धर्म और राजनीति की भूमिका पर डॉ. आम्बेडकर के विचार।
10. धर्म और राजनीति पर समसामयिक शोध और लेख।
11. Ministry of Law and Justice, Government of India। Representation of the People Act, 1951 – चुनावों में धर्म, जाति आदि के मुद्दों के उपयोग पर कानूनी प्रतिबंध।
12. सेक्युलरिज्म और भारतीय लोकतंत्र (2015)— भारतीय धर्मनिरपेक्षता पर विद्वानों द्वारा प्रकाशित शोध पत्र।
13. प्रसिद्ध समाचार पत्र— धर्म और राजनीति से जुड़े समसामयिक घटनाक्रम और उनके विश्लेषण।
14. राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो— भारत में सांप्रदायिक हिंसा और धार्मिक अपराधों पर आधिकारिक आंकड़े।
15. यूनाइटेड नेशंस रिपोर्ट्स (UN Reports on Human Rights and Freedom of Religion) — भारत और वैश्विक स्तर पर धर्म और राजनीति से उत्पन्न मानवाधिकार के मुद्दे।